मसाला उत्पादक किसानों की क्षमता में सस्टनेबल फार्मिंग की उपयोगिता

आज की स्थिति:

भारत में मसालों के व्यापार का एक लंबा इतिहास रहा है और यह लगातार दुनिया के सबसे बड़े मसाला उत्पादकों और निर्यातकों में से एक बना हुआ है। पश्चिमी घाट दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण जैव विविधता क्षेत्रों में से एक है और मसालों की खेती के लिए मुख्य क्षेत्र है। मसाले भारत में लाखों छोटी खेती वाले किसानों को आजीविका का एक प्रमुख स्रोत उपलब्ध कराते हैं। भारत में कुल मसाला उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा छोटे-स्तर के किसानों का है, जो मुश्किल से दो हेक्टेयर से कम जमीन पर और अन्य फसलों के साथ मौसमी रूप से मसालों की खेती करते हैं।

मसाला किसानों के लिए प्रमुख चुनौतियां:

- अनिश्चित कीमत
- खराब स्थिति
- जैव विविधता का नुकसान
- उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग और रासायनिक के अनुपयुक्त उपयोग की वजह से भूमि के क्षरण ने क्षेत्र में कीड़ों, कीटों और रोगों के प्रसार व संचरण को बढ़ावा दिया है।

सस्टनेबल फार्मिंग इन किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाएगा।, उचित मूल्य पर अच्छी गुणवत्ता वाले सतत तरीके से उत्पादिन मसालों के लिए दीर्घावधि मांग सुनिश्चित करने के माध्यम से मसाला उत्पादन छोटी खेती कि किसानों के लिए एक आकर्षक विकल्प बन जाएगा, इस प्रकार रूप से उगाए गए मसालों की निरंतर आपूर्ति का एक आधार तैयार होगा।

उद्देश्य:

सस्टनेबल फार्मिंग के द्बारा छोटे खेती वाले मसाला किसानों की क्षमता में वृद्धि का उद्देश्य किसानों की क्षमता बढ़ाकर और उत्पादन प्रक्रियाओं को आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणयी रूप से अधिक टिकाऊ बनाने के माध्यम से भारत के चार राज्यों में इलायची, जीरा और हल्दी के उत्पादन को मजबूत बनाना है।

प्रोग्राम:

- मसाला किसानों को लक्षित करते हुए चार साल का क्षमता विकास कार्यक्रम, जिसमें भारत के चार राज्यों - केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान की लगभग 10,000 हेक्टेयर जमीन को सस्टनेबल फार्मिंग के द्वारा खेती करना।
- मसालों के सतत उत्पादन में लगे कृषक समुदायों को बाय-बैक व्यवस्था और बाजार उपलब्ध कराने के माध्यम से किसानों को जागरूक करना।

अपेक्षित परिणाम:

- प्रमाणित मसालों से छोटे किसानों की शुद्ध आय में 20 प्रतिशत की वृद्धि करना
- प्रशिक्षण कार्यशालाओं में 50 प्रतिशत महिला किसानों को शामिल करना
- महिला किसानों की प्रतिभागिता में 40 प्रतिशत का इजाफा करना
- मसाला कृषि प्रथाओं और कृषि-व्यापार प्रबंधन पर 2000 किसानों को प्रशिक्षित करना

german cooperation
DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT

Implemented by
giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH

develoPPP
Where business meets development.

AVT McCORMICK INGREDIENTS PVT. LTD.

Enhancing Smallholder Spice Farmers' Capacities in Sustainable Farming

Situation

India has a long history of trading of spices and continues to be one of the world's largest producers and exporters. The Western Ghats are among the world´s most important Biodiversity Hotspots and one of the main areas for spice cultivation. Spices provide a prime source of livelihood to millions of smallholder farmers in India. About 85 per cent of the spice production in India is by small-scale farmers, who typically farm on less than two hectares of land and seasonally rotate spices with other crops.

Major challenges for Spices farmers:

- Uncertain pricing
- Adverse climatic conditions
- Loss of biodiversity
- Land deterioration due to overuse of fertilisers and unsuitable use of chemical pesticides has led to the spread and transmission of insect, pests and diseases in the area.

Sustainable spice production will strengthen the economic resilience of these farmers. By ensuring long-term demand of good quality, sustainably produced spices at a fair price, spice production will become a more attractive option for smallholder farmers, thus creating a continuous supply base of sustainably grown spices.

Objective

Enhancement of Smallholder Spice Farmers' Capacities in Sustainable Farming' aims to strengthen the production of cardamom, cumin and turmeric in four states of India, by increasing the capacities of spice farmers and making the production practices economically, socially and environmentally more sustainable.

Approach

- Capacity development programme targeting spice farmers over four years covering approx. 10,000 ha to be integrated in AVT McCormick's supply chain in four states of India – Kerala, Tamil Nadu, Karnataka, Rajasthan.
- Build industry-wide capabilities around sustainable spice farming by providing buy-back arrangements and market access to farming communities engaging in sustainable production of spices.

Expectations

- To increase net income of smallholder farmers from certified spices by 20%
- To engage 50% women farmers in trainings.
- To increase participation of women farmers to 40%
- To train 2000 farmers on sustainable spice farming practices and agri-business management.

Published by:
Deutsche Gesellschaft für
Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH

Registered offices
Bonn and Eschborn, Germany

Address
A2/18, Safdarjung Enclave
New Delhi- 110029, India

T +91-11-4949 5353
F +91-11-4949 5391
E poonam.pande@giz.de
I www.giz.de/en

New Delhi, 2021

Responsible:
Dr Poonam Pande, Advisor

Design:
Neha A.Owaisy, Junior Communication Officer

Photo credits/sources:
Shutterstock